ज्योतिष और जादू की राजनैतिक शक्ति

ज्योतिषाचार्य तेजस्कर पाण्डेय

इस प्रकार ज्योतिष और तांत्रिक परम्पराएँ हमें यह स्मरण कराती हैं कि सत्ता का सबसे बड़ा रूप भीतर की सत्ता है, और मुक्ति का सबसे बड़ा रूप आत्म-ज्ञान है. जब यह ज्ञान व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र तक प्रवाहित होता है, तब वह राजनीति किसी दल या शासन की नहीं रह जाती, बल्कि वह आध्यात्मिक मानवता की राजनीति बन जाती है—जहाँ हर व्यक्ति अपनी नियति का निर्माता और हर समाज अपनी संस्कृति का साधक बन जाता है. यही ज्योतिष और जादू की सच्ची राजनैतिक शक्ति है, जो मनुष्य को भय से नहीं, बल्कि ज्ञान, प्रेम और समरसता से स्वतंत्र करती है.

मानव सभ्यता के विकास की प्रक्रिया में जहाँ एक ओर विज्ञान, तर्क और तकनीक ने बाहरी जीवन को आकार दिया, वहीं दूसरी ओर ज्योतिष, तंत्र, जादू और अन्य रहस्यमयी परम्पराओं ने मानव के आन्तरिक संसार को दिशा दी. इन दो धाराओं का संघर्ष और संतुलन ही संस्कृति का वास्तविक स्वरूप बनाता है. आज जब मनुष्य भौतिक रूप से समृद्ध परन्तु मानसिक रूप से विखंडित हो चुका है, तब पुन: इन परम्पराओं की ओर लौटना किसी अंधविश्वास की वापसी नहीं, बल्कि आत्मचेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अनिवार्यता है. वास्तव में ज्योतिष और जादू जैसी परम्पराएँ केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि राजनैतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विमर्श की आधारशिला हैं—क्योंकि ये व्यक्ति को स्वयं की सत्ता का बोध कराती हैं.

प्राचीन भारत में शक्ति और नीति के सभी निर्णय ब्रह्माण्डीय लय से जोड़े गए थे. किसी नगर की स्थापना, किसी युद्ध का प्रारम्भ, या राजा के राज्याभिषेक का मुहूर्त केवल एक गणना नहीं, बल्कि यह घोषणा होती थी कि मानव की शक्ति तभी न्यायोचित है जब वह आकाशीय नियमों के अनुरूप हो. यह परम्परा दर्शाती है कि राजनीति और ज्योतिष एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं. ब्रह्माण्ड का संतुलन और शासन का संतुलन, दोनों समान सूत्र पर आधारित हैं—ऋत, अर्थात् सार्वभौमिक अनुशासन. ऋग्वेद से लेकर कौटिल्य के अर्थशास्त्र तक इस विचार का निरंतर प्रवाह मिलता है कि कोई भी शासन तभी स्थायी है जब वह समय, दिशा और ग्रहों के साथ समरस हो.

इसी प्रकार, जादू या तांत्रिक परम्पराओं को यदि राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो वे सत्ता के केंद्र से नहीं, बल्कि जन-संस्कृति से उपजती हैं. जहाँ ज्योतिष ब्रह्माण्डीय गणना और नियमन का विज्ञान है, वहीं जादू इच्छा, प्रतीक और संकल्प का विज्ञान है. दोनों मिलकर यह सिखाते हैं कि शक्ति केवल राजमहलों या संसदों में नहीं, बल्कि व्यक्ति की चेतना में निवास करती है. यही विचार लोक-राजनीति की गहरी जड़ें बनाता है. जब कोई सामान्य व्यक्ति अपने जीवन की दिशा ज्योतिषीय संकेतों से तय करता है या कोई स्त्री तांत्रिक साधना के माध्यम से आत्मबल अर्जित करती है, तो यह केवल धार्मिक क्रिया नहीं होती, बल्कि सत्ता के केंद्रीकरण के विरुद्ध एक सांस्कृतिक प्रतिरोध होता है.

राजनैतिक इतिहास में देखें तो सत्ता की स्थापना के लिए ब्रह्माण्डीय समर्थन अनिवार्य माना गया. अशोक के शिलालेखों से लेकर मुगलकालीन राज-दरबार तक ज्योतिषियों और तांत्रिकों की भूमिका निर्णायक रही. वे केवल शुभ समय नहीं बताते थे, बल्कि राज्य की नैतिक दिशा तय करते थे. मध्यकालीन यूरोप में भी जॉन डी, कॉपरनिकस, न्यूटन और अन्य विद्वानों ने विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय किया. आधुनिक वैज्ञानिक क्रांति से पहले तक ज्योतिष और अल्केमी सत्ता के दार्शनिक औजार थे. यह परम्परा यह सिखाती है कि शासन केवल प्रशासनिक तंत्र नहीं, बल्कि एक ब्रह्माण्डीय संवाद है—आकाश और पृथ्वी के बीच सामंजस्य की क्रिया.

आधुनिक युग में जब विज्ञान ने इन परम्पराओं को हाशिए पर डाल दिया, तब भी मनुष्य का अंतरंग इनसे जुड़ा रहा. आज समाज के विभिन्न वर्गों में ज्योतिष का पुनरुत्थान केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्मान्वेषण की लहर है. आधुनिक व्यक्ति, जो राज्य, संस्था और तकनीकी नियंत्रण से असंतुष्ट है, वह ज्योतिष और आध्यात्मिक प्रतीकों के माध्यम से अपनी आत्मिक संप्रभुता पुन: प्राप्त करना चाहता है. यह वही प्रक्रिया है जिसे समाजशास्त्री "symbolic empowerment" कहते हैं- जहाँ व्यक्ति अपनी असहायता को प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से शक्ति में बदल देता है.

सामुदायिक दृष्टि से ज्योतिष और जादू का अर्थ केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समरसता है. जब पूरा समाज एक साथ ग्रहण, संक्रांति, नववर्ष या नवरात्र जैसे पर्व मनाता है, तब यह एक राजनैतिक एकता का भी निर्माण करता है. इन पर्वों में समय, दिशा, और प्रकृति के परिवर्तन के साथ समाज की आन्तरिक गति जुड़ जाती है. यह एक ऐसी राजनीति है जो न तो हिंसक है, न प्रतिस्पर्धात्मक, बल्कि संगीतमय और सहयोगात्मक राजनीति है. इसी को भारतीय परम्परा में काल का राजधर्म कहा गया—जहाँ शासन का उद्देश्य समय की गति के साथ सामंजस्य बनाए रखना है.

सांस्कृतिक प्रतिरोध की दृष्टि से भी ज्योतिष और तंत्र की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है. औपनिवेशिक काल में जब पश्चिमी शिक्षा और तर्कवाद ने भारतीय ज्ञान-प्रणालियों को 'अवैज्ञानिक' घोषित किया, तब भी गाँवों और मठों में आचार्य और साधक ज्योतिष, मंत्र और संस्कार की परम्परा को जीवित रखे रहे. यह मौन प्रतिरोध था—संस्कृति की रक्षा का. स्वतंत्रता संग्राम के कई नेता जैसे लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, अरविन्द घोष आदि ने भारतीय काल-चेतना को स्वतंत्रता के विचार से जोड़ा. गांधीजी के लिए हर उपवास और अनुष्ठान एक राजनीतिक साधना थी. इस प्रकार ज्योतिष और जादू का ज्ञान स्वतंत्रता और आत्मबल की ऊर्जा में परिवर्तित हुआ.

व्यक्तिगत मुक्ति के स्तर पर ये परम्पराएँ मनुष्य को आत्म-नियंत्रण का विज्ञान सिखाती हैं. ज्योतिष यह बताता है कि समय के साथ कैसे चलना है, जबकि जादू यह सिखाता है कि संकल्प से परिस्थिति को कैसे बदलना है. दोनों मिलकर यह बोध देते हैं कि मनुष्य नियति का दास नहीं, बल्कि उसका सह-निर्माता है. यह दृष्टि व्यक्ति को नैतिक शक्ति, आत्मविश्वास और जिम्मेदारी देती है. यही सच्ची मुक्ति है—जहाँ भय की जगह समझ आती है, और अंधविश्वास की जगह चेतना.

राजनीति का गूढ़ अर्थ भी यही है. शासन केवल बाहरी नियंत्रण नहीं, बल्कि आत्मशासन है. जो व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और कर्मों पर शासन कर सकता है, वही समाज का सच्चा नेता है. ज्योतिष और तांत्रिक परम्पराएँ व्यक्ति को इसी आत्मशासन की दिशा में ले जाती हैं. यह नेतृत्व बाहरी सत्ता से नहीं, बल्कि आन्तरिक जागरण से आता है. इसी जागरण से समाज में न्याय, शांति और सृजन का मार्ग खुलता है.

राशिफल

दिनांक- 26 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य तुला राशि में, मंगल तुला राशि में ता. 27 को 3/26 दिन से वृश्चिक राशि में, बुध तुला राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा धनु मकर और कुम्भ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- इस सप्ताह ता. 26 अनुराधायां बुध के प्रभाव से रूई चांदी में घटाबढ़ी के बाद झटके की तेजी होगी अनाज में भी तेजी का संकेत है, सभी व्यापारिक वस्तुओं में उठा पटक रहेगी व्यापारी बाजार देखकर कार्य करें. ता. 27 वृश्चिके मंगल के प्रभाव से वायदा बाजार एवं हाजर बाजारों में अच्छी तेजी का झटका आयेगा, रूई, खाड़, गुड़, सूत, सन, वस्त्र, सरसों, तिलहन में तेजी होगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	26 अक्टूबर को	पांडव पंचमी
सोमवार	27 अक्टूबर को	सूर्यषष्ठी व्रत, डालाछठ, छठ पूजा
बुधवार	29 अक्टूबर को	गोपाष्टमीं,
गुरूवार	30 अक्टूबर को	अक्षय नवमी, आंवला नवमी, कुष्माड नवमी, विष्णु त्रिरात्रिव्रत प्रारंभ
शुक्रवार	31 अक्टूबर को	विष्णु त्रिरात्रि व्रत
शनिवार	01 नवम्बर को	देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी एकादशी, पंढरपुर मेला, तुलसी विवाह प्रा., विष्णु त्रिरात्रि व्रत पूर्ण, भीष्म पंचक प्रारंभ

मेष

इस सप्ताह आर्थिक मामलों से निपटना होगा, पुराने कर्जो से छुटकारा पाने के लिये आपको योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना पड़ेगा. पारिवारिक आयोजनों में आप बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे, बच्चों के कैरियर को लेकर चिन्ता रह सकती है, मानसिक तनाव की स्थिति से छुटकारा मिलेगा, जिस पर विश्वास कर रहे हैं, वे लोग आपका साथ छोड़ सकते हैं.

वृषभ

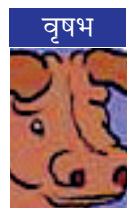

नये संपर्क और नये व्यक्ति लाभदायक रहेंगे, आप सिर्फ लाभ पर ही ध्यान नहीं देंगे, अपितु रिश्ते बनाने का भी प्रयास करेंगे. आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण दूसरों के कार्य में ध्यान देंगे, किसी कार्य के लिये की गई यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी, अपने लगाव व नजरिये में बदलाव का अवसर मिलेगा, व्यक्तिगत जीवन में कार्य में सामंजस्य से आप कामयाब रहेंगे.

मिथुन

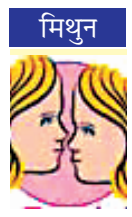

आपका यह सप्ताह प्रगति व सफलता लेकर आ रहा है, जो सपने आप देख रहे हैं उन्हें पूरा करने की राह बनेगी, अपनी वरिष्ठता और सामर्थ्य से ज्यादा जिम्मेदारी आने से आपका तनाव बढ़ सकता है, समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाने मे सफल रहेंगे, दूसरों की मदद कर अपने मन को खुशी देंगे, कार्यस्थल पर अनिश्चय का माहौल बना रहेगा, संबंधों की फिर से समीक्षा करनी होगी.

कर्क

इस सप्ताह निजी संबंधों पर ध्यान देने का भरपूर समय मिलेगा, पुराने दोस्तों से मुलाकातों का दौर चलेगा, किसी भी योजना को आप इस तरह से अंजाम देंगे कि लोग आपकी तारीफकरेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, आपको आय के नये स्त्रोत तलाशना पड़ेंगे, घूमने का कार्यक्रम बन सकता है, दूसरों की मर्यादा का ध्यान रखें.

सिंह

आपको अपनी अभिरूचियों व खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा, आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार अपने कार्य बनाते चले जायेंगे, भाग्य भी आपकी मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास में वृद्धि होगी, कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की ऊँचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे.

कन्या

आपको अपने प्रयासों और मेहनत की बदौलत अच्छी सफलता मिलेगी, आपका मौलिक चिंतन आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगा, कार्यक्षेत्र में आपको निरंतर सफलता मिलेगी, पारिवारिक व निजी जीवन में खुशियों का अनुभव होगा, जो लोग आपके कार्य में अड़चने खड़ी कर रहे हैं, वे सभी सहयोग करेंगे, मेहनत से लाभ प्राप्त करेंगे, बड़े निवेश के लिये सभी की राय जरूरी है.

तुला

परिवार की खुशियों पर बड़ा खर्च होगा, जिसे आप पसंद करते हैं, उसके साथ कुछ समय गुजारकर खुशी मिलेगी, पारिवारिक उत्सवों में प्रसन्नता मिलेगी, उच्च अध्ययन में सफलता के आसार हैं, नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को सफलता मिलेगी, विरोधी आपकी गतिविधियों पर नजर रखेगा, कामकाज में सावधानी रखें, अपने बिखरे हुये कार्यो को समेटने में सफलता मिलेगी.

वृश्चिक

जिद में आकर गलत फैसला लेने से बचें, उच्च अध्ययन में सफलता मिलेगी, जिस योजना को लेकर काफी समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता का योग है. नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते हैं, उन्नति की संभावना है, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी.

धनु

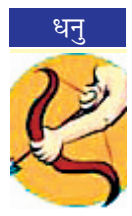

धनु- आपका पूरा ध्यान अपने कैरियर व भविष्य की योजनाओं की ओर रहेगा, नई योजनाओं को पूरा करने में सभी का सहयोग रहेगा, लोगों को अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे, राह में आ रही मुस्किलों का सामना करने पर कामयाबी मिलेगी, कार्य स्थल पर नई शुरूआत का अनुभव होगा. व्यस्तता के कारण परिवार को वक्त देना मुश्किल होगा.

मकर

पुरानी परेशानी से छुटकारा मिलेगा, सामाजिक और पारिवारिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी. पार्टियों का दौर जारी रहेगा, दायरा बढ़ाने की कोशिश में रहेंगे. मौजमस्ती छोड़कर कुछ काम करने का मन बनेगा, संपत्ति संबंधी मामले सुलझेंगे, सप्ताहान्त में विरोधियों से सजग रहकर कार्य करें, बुजुर्ग की सलाह पर ध्यान दें.

कुम्भ

अभी तक की गई मेहनत का लाभ मिलेगा. पारिवारिक व सामाजिक जीवन में अपने संबंधों को फिर से घनिष्ठ बनाने में मदद मिलेगी, मानसिक संतोष हेतु कुछ दिन के लिये घर से दूर जा सकते हैं, पारिवारिक सुरक्षा हेतु निवेश करेंगे, कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से मेलजोल बढ़ायें, यह आपके लिये फायदेमंद होगा.

मीन

भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से बनेगा, अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं, वे भी आपकी काबलियत की तारीफकरेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.

घर को बनाएं ऊर्जा-स्थान

जानें पंचतत्वों का संतुलन और 7 बड़े वास्तु दोष के लक्षण

घर केवल ईंट-पत्थर की दीवारों का ढांचा नहीं, बल्कि ऊर्जा का केंद्र होता है. प्राचीन भारतीय ज्ञान वास्तु शास्त्र बताता है कि भवन का निर्माण किस दिशा और किस विधि से किया जाए, ताकि उसमें शांति, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार बना रहे. विशेषज्ञों के अनुसार जैसे शरीर को अच्छे स्वास्थ्य के लिए सही आहार और विश्राम चाहिए, वैसे ही घर को भी संतुलित दिशा और तत्वों की आवश्यकता होती है.

पंचतत्वों पर आधारित है वास्तु

वास्तु शास्त्र पांच प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश - के संतुलन पर आधारित है.

- पृथ्वी घर की स्थिरता और नींव से जुड़ी है.
- जल जीवन का प्रतीक है, इसलिए बोरिंग या टंकी उत्तर-पूर्व दिशा में होनी चाहिए.
- अग्नि ऊर्जा का स्रोत है, अत: रसोई दक्षिण-पूर्व दिशा में शुभ मानी जाती है.
- वायु प्रवाह के लिए खिड़कियाँ उत्तर-पश्चिम दिशा में होना बेहतर होता है.
- आकाश खुला और स्वच्छ स्थान दर्शाता है, जिससे सकारात्मक ऊर्जा पूरे घर में फैलती है.

दिशाओं का महत्व

- पूर्व दिशा सूर्य की ऊर्जा का प्रवेश द्वार मानी जाती है, इसलिए मुख्य द्वार या खिड़कियाँ यहाँ होना शुभ होता है.
- उत्तर दिशा धन के देवता कुबेर की दिशा है और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है.
- दक्षिण दिशा स्थिरता प्रदान करती है, अत: शयनकक्ष के लिए उपयुक्त है.
- पश्चिम दिशा संतुलन और विश्राम का संकेत देती है, बच्चों के कक्ष के लिए यह शुभ रहती है.

वास्तु के अनुसार घर की योजना

- मुख्य द्वार पूर्व या उत्तर दिशा में रखना सर्वोत्तम है.
- रसोई दक्षिण-पूर्व कोण में होनी चाहिए और भोजन बनाते समय मुख पूर्व दिशा की ओर होना शुभ है.
- पूजा कक्ष उत्तर-पूर्व दिशा में रखने से घर में दिव्यता और शांति बनी रहती है.
- शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम दिशा में होने से दांपत्य जीवन में स्थिरता आती है.
- शौचालय या स्नानघर पश्चिम या नैऋत्य दिशा में होने चाहिए, जबकि घर का मध्य भाग हल्का और स्वच्छ रहना चाहिए ताकि शुभ ऊर्जा का प्रवाह बना रहे.

वास्तु दोष के लक्षण

यदि घर में नकारात्मक ऊर्जा का वास हो, तो मानसिक अशांति, तनाव, बार-बार झगड़े, आर्थिक रुकावटें, स्वास्थ्य समस्याएं और कार्यों में विफलता जैसे लक्षण दिखाई देते हैं. ऐसे में वास्तु सुधार द्वारा संतुलन स्थापित किया जा सकता है.

वास्तु का सार

वास्तु शास्त्र केवल निर्माण की तकनीक नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित करने का विज्ञान है. जब घर प्रकृति और दिशाओं के अनुरुप बनाया जाता है, तो वहां सुख, शांति और समृद्धि अपने आप बढ़ती है. यह मान्यता आज भी प्रासंगिक है कि हर दिशा में ऊर्जा का प्रवाह है – बस उसे सही मार्ग देना ही वास्तु शास्त्र का उद्देश्य है.

तुलसी माता के पूजन से आती है घर में सुख और शांति

कब है तुलसी विवाह? जानें तिथि, शुभ मुहूर्त और पूजा विधि

तुलसी विवाह हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र पर्व है, जिसे कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि पर मनाया जाता है. इस दिन भगवान विष्णु (शालिग्राम) और माता तुलसी (महालक्ष्मी स्वरूप) का विवाह संपन्न कराया जाता है. यह पर्व न केवल भक्ति का प्रतीक है, बल्कि शुभ कार्यों की शुरुआत का भी शुभ संकेत माना जाता है.

हिंदू पंचांग के अनुसार तुलसी विवाह 2025 का पावन पर्व रविवार, 2 नवंबर 2025 को मनाया जाएगा. इस दिन भगवान विष्णु के जागने के बाद शुभ कार्यों की शुरुआत होती है. तुलसी माता को देवी महालक्ष्मी का अवतार और विष्णुप्रिय कहा गया है, इसलिए इस दिन शालिग्राम (भगवान विष्णु) के साथ तुलसी का विवाह धार्मिक रीति-रिवाजों से संपन्न किया जाता है.

पंचांग के अनुसार कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि की शुरुआत 2 नवंबर की सुबह 7-31 बजे से होगी और यह 3 नवंबर की सुबह 5-07 बजे तक रहेगी. इन मुहूर्तों में तुलसी विवाह या तुलसी पूजन करने से अत्यंत पुण्य फल की प्राप्ति होती है. इस दिन तुलसी माता को आंगन या मंदिर में स्थापित करें. उनके चारों ओर सुंदर मंडप सजाएं और रंगोली बनाएं. तुलसी को चुनरी, चूड़ी, श्रृंगार सामग्री और साड़ी अर्पित करें. दाहिनी ओर शालिग्राम भगवान को विराजित करें. गंगाजल से स्नान करवाकर तुलसी को रोली का और शालिग्राम को चंदन का तिलक लगाएं. फूल, मिठाई, गन्ना, सिंघाड़ा और पंचामृत का भोग लगाकर मंत्रोच्चार के साथ सात फेरे कराएं. विवाह के बाद आरती करें और प्रसाद का वितरण करें. तुलसी विवाह करवाने से कन्यादान के समान पुण्य मिलता है. मान्यता है कि इस दिन विवाह कराने से घर में सुख, शांति और समृद्धि आती है. विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए और अविवाहित कन्याएं मनचाहा वर पाने की कामना से यह व्रत रखती हैं.

तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी.
धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमन :प्रिया..
लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत्.
तुलसी भूर्महालक्ष्मी : पद्मिनी श्रीर्हरप्रिया..

तुलसी विवाह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भक्ति, पवित्रता और गृहस्थ जीवन के मंगल का उत्सव है.

उत्तर दिशा में कर लें ये काम धन के देवता कुबेर होंगे प्रसन्न

घर या ऑफिस में कुछ आसान वास्तु नियमों अपनाने से वातावरण में तुरंत सकारात्मक बदलाव महसूस किया जा सकता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, हर दिशा का अपना महत्व है और उत्तर दिशा विशेष रूप से धन, समृद्धि और सौभाग्य से जुड़ी मानी जाती है. इसे कुबेर देव का क्षेत्र कहा जाता है, जो हमारे जीवन में आर्थिक स्थिरता और खुशहाली लाने में सहायक होते हैं.

उत्तर दिशा में सही चीजें रखने और कुछ सरल उपाय करने से घर या ऑफिस में नकारात्मक ऊर्जा कम होती है और सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है. इस दिशा में पौधे, तिजोरी, कुबेर यंत्र, छोटे फाउंटेन या एक्वेरियम रखने से न केवल धन लाभ के योग बनते हैं, बल्कि घर का वातावरण भी शांत, सुखमय और समृद्ध बनता है. सही दिशा और वस्तुओं का चुनाव करने से आप अपने जीवन में समृद्धि और सौभाग्य आकर्षित कर सकते हैं.

धन और तिजोरी- वास्तु शास्त्र के अनुसार, उत्तर दिशा को धन और समृद्धि से जोड़ा जाता है. इस दिशा में तिजोरी, पैसे या अन्य धन-संबंधी वस्तुएँ रखने से धन लाभ के योग बनते हैं और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है. आप इस दिशा में कुबेर देव की मूर्ति या चित्र भी रख सकते हैं, जिससे घर में धन और सुख-शांति बढ़ती है.

पौधे- उत्तर दिशा में मनी प्लांट, तुलसी या बांस का पौधा रखना लाभकारी माना जाता है. ये पौधे न केवल वातावरण को ताज़ा और हरा-भरा बनाते हैं, बल्कि धन, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा को भी आकर्षित करते हैं. बांस का पौधा विशेष रूप से घर में सौभाग्य और खुशहाली लाने के लिए शुभ माना जाता है.

सजावट की वस्तुएं- उत्तर दिशा में छोटा फाउंटेन, एक्वेरियम, धातु या क्रिस्टल से बना कछुआ, या नदी और झरने की तस्वीरें रखना शुभ माना गया है. ये वस्तुएँ घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बनाए रखती हैं और वातावरण को शांत व सुखमय बनाती हैं.

डूबते और उगते सूर्य को अर्घ्य देने के पीछे धार्मिक रहस्य

महापर्व छठ 2025

25 से 28 अक्टूबर तक मनाया जाएगा आस्था, तपस्या और सूर्य उपासना का अद्भुत संगम — जानें क्यों दिया जाता है अस्ताचल और उदीयमान सूर्य को अर्घ्य छठ पूजा 2025 इस वर्ष 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक मनाई जाएगी. चार दिनों तक चलने वाला यह अनूठा पर्व सूर्य देव और छठी मैया को समर्पित है. व्रती इस दौरान कठिन 36 घंटे के निर्जला उपवास का पालन करते हैं और डूबते एवं उगते सूर्य को अर्घ्य देकर परिवार की सुख-समृद्धि, संतान की लंबी आयु और जीवन में ऊर्जा की कामना करते हैं.

छठ पूजा हिंदू धर्म के सबसे पवित्र पर्वों में से एक है, जिसकी परंपरा हजारों वर्षों पुरानी मानी जाती है. यह केवल एक धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि प्रकृति, सूर्य और जल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का उत्सव भी है. 2025 में यह पर्व 25 अक्टूबर (नहाय-खाय) से शुरू होकर 28 अक्टूबर (उषा अर्घ्य) तक

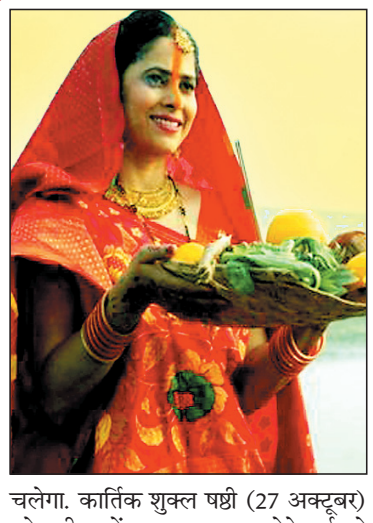

चलेगा. कार्तिक शुक्ल षष्ठी (27 अक्टूबर) को व्रती घाटों पर जाकर अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देते हैं.

धार्मिक मान्यता के अनुसार, सूर्य का अस्त होना जीवन में संघर्ष और कठिनाई का प्रतीक है, और अर्घ्य देना इस बात का संकेत है कि व्यक्ति आशा और विश्वास नहीं छोड़ता. वैज्ञानिक दृष्टि से, सूर्यास्त के समय की किरणों में पराबैंगनी किरणें बहुत कम होती हैं. जल में खड़े होकर सूर्य की इन किरणों का ग्रहण करने से शरीर को विटामिन डी मिलता है, जो हड्डियों और त्वचा के लिए लाभदायक है. इसके अलावा, यह प्रक्रिया शरीर की जैविक घड़ी को संतुलित करती है.

सप्तमी तिथि (28 अक्टूबर) को व्रती उषाकाल में उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं. धार्मिक मान्यता के अनुसार, यह नई शुरुआत, ऊर्जा और जीवन के पुनर्जागरण का प्रतीक है. छठी मैया को संतान की रक्षक देवी और सूर्य देव की बहन माना गया है. कहा जाता है कि छठ व्रत रखने से संतान की रक्षा होती है और परिवार में सुख-शांति बनी रहती है. यह व्रत पूर्ण शुद्धता, तपस्या और निष्ठा से किया जाता है. छठ केवल पूजा नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व का प्रतीक है. सूर्य और जल के प्रति आभार व्यक्त कर यह पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण, संयम और आत्मनियंत्रण का संदेश देता है.